B.A. Part-3, Paper-5 [Social Psychology]

Topic :→ Public opinion Formation

प्रश्न :→ जनमत की परिभाषा क्या है? जनमत निर्माण की प्रक्रिया को समझावें? Define Public opinion. Explain the process of Public opinion formation.

उत्तर :→ किसी सार्वजनिक विषय या सामूहिक समस्या के सम्बन्ध में जनता की 'अपना मत' जनमत कहलाता है। इस जनमत का निर्माण सामूहिक विचार-विमर्श वाद-विवाद के पश्चात् ही होता है। यह काम एक दिन में या एकाएक समाप्त नहीं हो जाता है। यह तो कुछ समय की माँग करता है और कुछ स्तरों में से गुजरता हुआ जनमत के रूप में सामने आता है। जनमत की इस निर्माण प्रक्रिया को इसीलिए एक क्रम बद्ध रूप में समझाया जा सकता है पर उससे भी पहले जनमत के वास्तविक अर्थ को समझ लेना उचित होगा।

श्री जान डीवी [John Dewey] के अनुसार, "जनमत एक निर्णय है जो जनता का निर्माण करने वाले लोगों द्वारा बनाया और स्वीकार किया जाता है तथा जो सार्वजनिक कार्यों से सम्बन्धित होता है।" "Public opinion is a judgement which is formed and entertained by those who constitute the public and is about public affairs."

श्री लार्ड ब्राइस [Lord Bryce] के अनुसार, "समाज पर प्रभाव डालने वाले तथा उसके हितों से सम्बन्धित प्रश्नों के विषय में मनुष्य जो विचार [Views] अपना लेता है, उन्हीं की समग्रता को साधारणतः जनमत कहते हैं। इस अर्थ में यह सब तरह की धारणाओं, विश्वासों, कल्पनाओं पक्षपातों तथा आकांक्षाओं का मिश्रित रूप है।"

[The term (Public opinion) is commonly used to denote the aggregate of the views men hold regarding matters that affect or interest community. Thus understood, it is a mixture of all sort of discrepant notions beliefs, prejudices and aspirations."]

श्री गिन्सबर्ग [Ginsberg] के अनुसार, "जनमत का अर्थ समाज में प्रचलित उन विचारों तथा

निर्णयों का समूह है जो बहुत-कुछ निश्चित रूप से प्रतिपादित है, जिसमें कुछ स्थायित्व है और जिसके प्रतिपादक उसे सामाजिक समझते हैं।"

जनमत निर्माण की प्रक्रिया [Process of Public Opinion Formation] :— उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि किसी सामान्य हित या समस्या के सम्बन्ध में सामूहिक निर्णय को ही हम जनमत कहते हैं। चूँकि यह पूरे समुदाय का निर्णय होता है और चूँकि समुदाय के सभी सदस्यों को एकाएक एक स्थान पर एकत्रित करके उस विषय के सम्बन्ध में निर्णय लेने को कहा नहीं जा सकता, इसलिए सामूहिक निर्णय में कुछ समय लगता है जबकि विभिन्न लोगों को अपने-अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिलता है और वे एक-दूसरे के विचारों से भी परिचित होते हैं। इस प्रकार विचारों का आदान-प्रदान, तर्क-वितर्क, समालोचना, धुंधले स्पष्टीकरण आदि के माध्यम से जनमत-निर्माण की प्रक्रिया धीरे-धीरे आगे बढ़ती है। सर्वप्रथम एक सामान्य समस्या या सार्वजनिक विषय सामने आता है। फिर उसके सम्बन्ध में कुछ अस्पष्ट और छिटके हुए विचारों को व्यक्त किया जाता है। समाचारपत्र, रेडियो या संदेशवाहन के अन्य किसी साधन अथवा प्रत्यक्ष भाषण आदि के माध्यम से वे अस्पष्ट विचार समुदाय में फैल जाते हैं, लोगों को उस विषय या समस्या के सम्बन्ध में सूचना मिलती है, वे लोग भी अपना-अपना विचार व्यक्त करते तथा सुझावों को प्रस्तुत करते और साथ ही अन्य लोगों के विचारों की आलोचना करते हैं। इसके फलस्वरूप अस्पष्ट विचार धीरे-धीरे स्पष्ट होता जाता है, विषय से संबंधित अनेक नये पहलू सामने आते हैं; अनेक वर्तमान पहलुओं को व्यर्थ समझकर त्याग दिया जाता है; अनेक संशोधन पेश किये जाते हैं। इस प्रकार सामान्य मत पनपता है, जिसे कि अधिकांश सदस्य 'अपना मत' मानते हैं (भले ही उनमें से बहुत से लोगों ने अपना व्यक्तिगत मत व्यक्त किया ही न हो और न ही विचार-विमर्श में सम्मिलित हुए हों)। यही मत जनमत कहलाता है और जनमत के निर्माण की यही प्रक्रिया है।

श्री किम्बल यंग [Kimball Young] ने जनमत निर्माण की प्रक्रिया के चार प्रमुख स्तरों का उल्लेख किया है

जो इस प्रकार है :—

(1) जनमत निर्माण का प्रथम स्तर वह है जबकि केवल एक ऐसा विषय या समस्या सामने आती है जोकि समुदाय के अधिकांश सदस्यों से सम्बन्धित हो या उनके हित को प्रभावित करती हो। इसी आधार पर उस विषय या समस्या को व्यक्तिगत न मानकर सार्वजनिक महत्व का विषय या समस्या मान लिया जाता है और चूंकि वह सार्वजनिक विषय है, इस कारण लोगों के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वे उसके सम्बन्ध में अपने विचार या सुझाव दें। यह समस्या या विषय जन-स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, व्यापार, गृह या विदेश नीति या राष्ट्रपति के चुनाव के सम्बन्धित हो सकता है। इस स्तर पर केवल समस्या या विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो और वे उसमें रुचि लेने लगे तथा विचारों को व्यक्त करें। अथवा करने को तत्पर हों।

(2) इसके बाद समस्या के सम्बन्ध में प्रारंभिक छान-बीन करने के उद्देश्य से विचार-विमर्श आरंभ किया जाता है। इस विचार-विमर्श या छानबीन के दौरान में यह देखा जाता है कि समस्या कितनी गम्भीर है, समस्या के सम्बन्ध में विचार करने का क्या यही उचित समय है, क्या वर्तमान परिस्थिति में उस समस्या का कोई व्यावहारिक हल ढूंढा जा भी सकेगा अथवा नहीं, और क्या वह हल वास्तव में उद्देश्य की पूर्ति कर सकेगा। इन सभी प्रश्नों को कुछ आरंभिक विचार, मत और सुझाव सहित समाज में फैलाया जाता है या वह स्वयं फैल जाता है। यह काम पारस्परिक बातचीत, समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में प्रकाशित वक्तव्यों, लेखों, सम्पादकीयों आदि के माध्यम से तथा रेडियो, टेलीविजन आदि, सिनेमा के द्वारा प्रसारित सूचनाओं विज्ञप्तियों द्वारा किया जाता है। इसी स्तर पर उस विषय या समस्या के सम्बन्ध में अधिकाधिक वास्तविक तथ्यों (actual facts) को एकत्रित करके उसके सम्बन्ध में यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से कुछ विशेष अध्ययन-कार्यों का भी आयोजन किया जा सकता है जिससे कि समस्या के कार्य-कारण सम्बन्ध के बारे में जानकारी प्राप्त हो और उस समस्या का व्यावहारिक हल ढूंढा जा सके। संक्षेप में इस स्तर पर समस्या या विषय के विभिन्न पहलुओं को और लोग अपने विचारों को व्यक्त करने के सम्बन्ध

में अधिक रुचि लेते।

(3) इस आरंभिक पहचान तथा विचार-विमर्श के आधार पर इस तीसरे स्तर पर अधिक गम्भीर वाद-विवाद व विचारों का आदान-प्रदान आरंभ होता है। इसके फलस्वरूप न केवल समस्या का अधिक स्पष्टीकरण होता है अपितु समस्या को सुलझाने के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के सुझावों को भी प्रस्तुत किया जाता है। इस स्तर पर अनेक विरोधी मत सामने आते हैं, उनमें ~~उग्र~~ उग्र 'संघर्ष' होता है, कुछ विचार या मत 'घायल' होते हैं तो अन्य कुछ मारे जाते हैं, कुछ अपनी हार स्वीकार करके विजयी पक्ष में जा मिलते हैं और शेष विजयी होने की घोषणा करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इस स्तर पर वाद-विवाद या तर्क-वितर्क अपनी चरम सीमा पर होता है और समस्या के सम्बन्ध में व्यक्त किये गए मतों में परिवर्तन, परिवर्द्धन व परिमार्जन होता जाता है। कुछ मत बेकार सिद्ध होते हैं; तो कुछ अत्यन्त उपयोगी। इस स्तर पर उत्तेजना या जोश भी अधिक होता है; इस कारण मतों में अतार्किकता भी पनप सकती है। किम्बल यंग (Kimball Young) के अनुसार, "यह स्तर महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यहाँ तक पहुँच जाने पर समस्या अत्यधिक स्पष्ट हो जाती है; और मुख्य निर्णय न केवल तार्किक अपितु तार्किक कारकों द्वारा भी नियंत्रित हो सकता है।"

(4) उपरोक्त तर्क-वितर्क, वाद-विवाद आदि के फलस्वरूप इस स्तर पर विषय या समस्या के सम्बन्ध में और उसके हल के सम्बन्ध में लोगों में बहुत-कुछ ऐकमत्य (Consensus) पनप जाता है। पर ऐकमत्य का तात्पर्य यह नहीं है कि 'सभी लोग पूर्णतया सहमत हो जाते हैं। बहुधा यह सहमति केवल अधिकांश सदस्यों की होती है। विरोधी मत रखने वाले कुछ लोग भी अवश्य होते हैं। फिर भी वह कुछ-न कुछ ऐकमत्य समुदाय के स्पष्ट निर्णय को ही व्यक्त करता है और जनमत कहलाता है। जनमत निर्माण की प्रक्रिया यहीं पर आकर समाप्त होती है और इस समाप्ति में ही उसकी सार्थकता निहित होती है।

Sinha